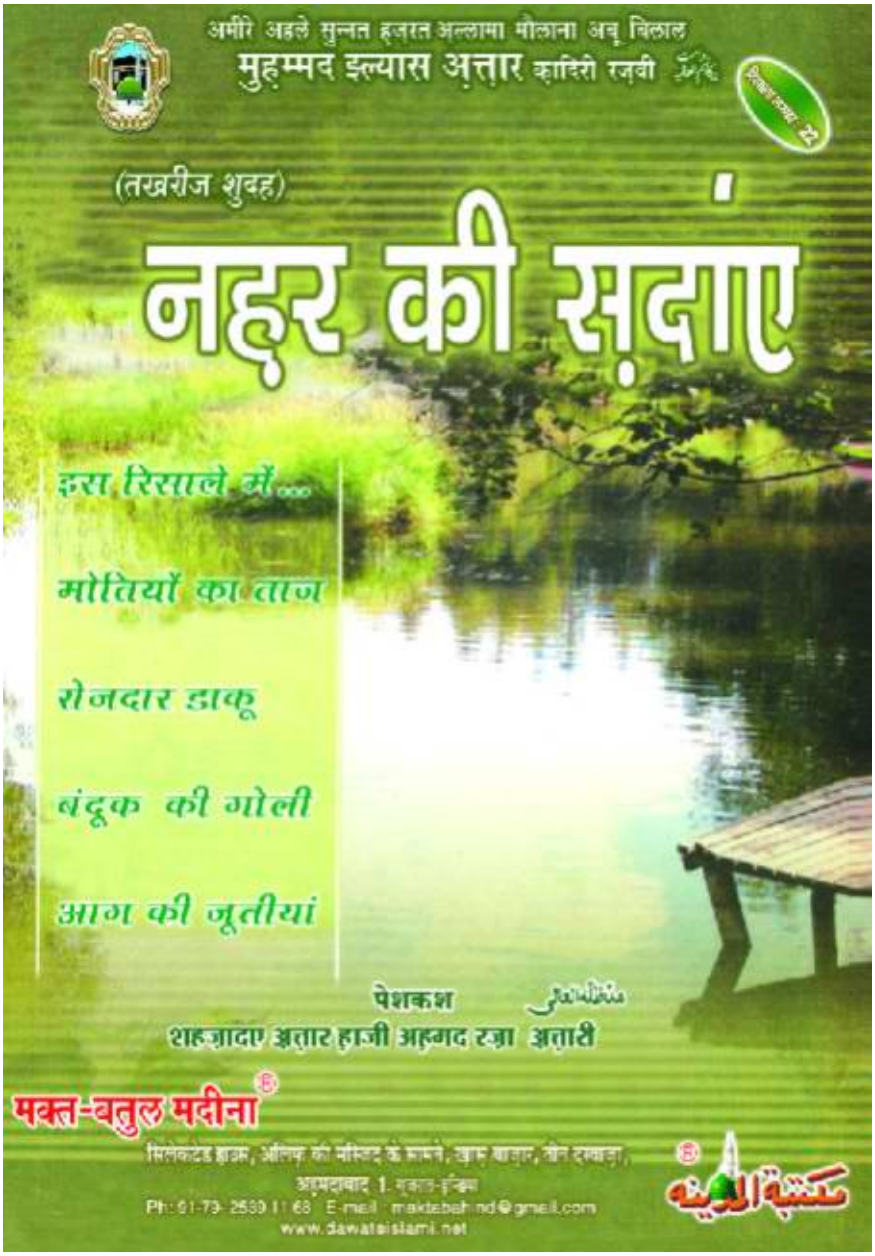

अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी
(तख़रीज शुदह)
नहर की सदाएं
इस रिसाले में...
मोतियों का ताज
रोज़दार डाकू
बंदूक की गोली
आग की जूतीयां
पेशकश
शहज़ादए अत्तार हाजी अहमद रज़ा अत्तारी
मक्त-बतुल मदीना
www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

नहर की स़दाएं[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस फ़रमाएंगे ।

मोतियों का ताज

अल क़ौलुल बदीअ़ में है, इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबूल अ़ब्बास अह़मद बिन मन्सूर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر को अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह सर पर मोतियों का ताज सजाए जन्नती लिबास में मल्बूस शीराज़ की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं, ख़्वाब देखने वाले ने अ़र्ज़ की, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? फ़रमाया, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं कस़रत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी और मुझे ताज पहना कर दाख़िले जन्नत फ़रमाया ।

(अल क़ौलुल बदीअ़, स़-फ़हा:112, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़ूबुल अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग थे, इस्लाम आवरी से क़ब्ल आप यहूदियों के बहुत बड़े आ़लिम थे । आप का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार मुत्तह़िदा अ़रब अमारात ही की एक रियासत अबू ज़ह़बी के दारुल ख़िलाफ़ा "अल ऐन शरीफ़" में है اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मज़ारे पुर अन्वार पर चन्द बार ह़ाज़िरी का श-रफ़ ह़ासिल हुवा है । येही ह़ज़रते ***सय्यिदुना कअ़ूबुल अह़बार*** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल का एक शख़्स (तौबा करने के बा'द फिर) एक फ़ाह़िशा के साथ काला मुंह कर के जब ग़ुसुल करने के लिये एक नहर में दाख़िल हुवा तो ***नहर की स़दाएं*** आने लगीं । "तुझे शर्म नहीं आती ? क्या तू ने तौबाा कर के येह अ़ह्द नहीं किया था कि अब कभी ऐसा नहीं करूंगा ।" येह सुन कर उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और वोह रोता चीख़ता येह केहता हुवा भागा, "अब कभी भी अपने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी नहीं करूंगा ।" वोह रोता हुवा एक पहाड़ पर पहुंचा जहां बारह अफ़राद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मश्ग़ूल थे । येह भी उन में शामिल हो गया । कुछ अ़रसे़ के बा'द वहां क़ह़त़ पड़ा तो नेक बन्दों का वोह क़ाफ़िला ग़िज़ा की तलाश में शहर की त़रफ़ चल दिया । इत्तिफ़ाक़ से उन का गुज़र उसी नहर की त़रफ़ हुवा । वोह शख़्स ख़ौफ़ से थर्रा उठा और केहना लगा, मैं इस नहर की त़रफ़ नहीं जाऊंगा क्यूंकि वहां मेरे गुनाहों का जानने वाला मौजूद है, मुझे उस से शर्म आती है । येह रुक गया और बारह अफ़राद नहर पर पहुंचे । तो नहर की स़दाएं आनी शुरूअ़ हो गईं, "ऐ नेक बन्दो ! तुम्हारा रफ़ीक़ कहां है ? उन्हों ने जवाब दिया, वोह केहता है, इस नहर पर मेरे गुनाहों का जानने वाला मौजूद है और मुझे उस से शर्म आती है ।" नहर से आवाज़ आई, "سُبْحٰنَ اللّٰه ! अगर तुम्हारा कोई

---

1. अमीरे अहले सुन्नत का येह बयान शारजा ता मदीनतुल औलिया मुल्तान 17 जुमादिल ऊला सिने 1418 को ब ज़रीए टेलीफ़ोन रिले हुवा था इसे ज़रूरतन तरमीम के साथ तह़रीरन पेश किया जा रहा है । ***उ़बैद रज़ा इब्ने अ़त़्त़ार*** عُفِیَ عَنْهُ

अ़ज़ीज़ तुम्हें ईज़ा दे बैठे मगर फिर नादिम हो कर तुम से मुआ़फ़ी मांग ले और अपनी ग़लत़ आ़दत तर्क कर दे तो क्या तुम्हारी उस से सुल्ह़ नहीं हो जाती ? तुम्हारे रफ़ीक़ ने भी तौबा कर ली है और नेकियों में मश्गूल हो गया है लिहाज़ा अब उस की अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ हो चुकी है। उसे यहां ले आओ और तुम सब येहीं नहर के कनारे इ़बादत करो।" उन्हों ने अपने रफ़ीक़ को ख़ुश ख़बरी दी और फिर येह सब मिल कर वहां मश्गूले इ़बादत हो गए ह़त्ता कि उस शख़्स़ का वहीं इन्तिक़ाल हो गया। इस पर नहर की स़दाएं गूंज उठीं, "ऐ नेक बन्दो ! इसे मेरे पानी से नहलाओ और मेरे ही कनारे दफ़्नाओ ताकि बरोज़े क़ियामत भी वोह येहीं से उठाया जाए।" चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया। रात को उस के मज़ार के क़रीब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते करते सो गए। सुब्ह़ सब का वहां से कूच करने का इरादा था। जब जागे तो क्या देखते हैं कि उस के मज़ार के अत़राफ़ में बारह सरव[1] के दरख़्त खड़े हैं। येह लोग समझ गए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह हमारे लिये ही पैदा फरमाए हैं, ताकि हमाा क ही और जाने के बजाए उन के साए में ही पड़े रहै। चुनान्चे वोह लोग वहीं इ़बादत में मश्गूल हो गए। जब उन में से किसी का इन्तिक़ाल होता तो उसी शख़्स़ के पहलू में दफ़्न किया जाता। ह़त्ता कि सब वफ़ात पा गए। बनी इस्राईल उन के मज़ारात की ज़ियारत के लिये आया करते थे। رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی اجمعین۔

(किताबुत्तव्वाबीन, स़-फ़ह़ा:90, दारे मक्त-बतुल मू'यद, अ़रब शरीफ़)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कितना महरबान और रह़ीमो करीम है। जब कोई बन्दा सच्चे दिल से तौबा कर लेता है तो उस से ख़ुश हो जाता है। इस ह़िकायत से येह भी दर्स मिला कि गुनाह करने वाला अगर्चे लाख पर्दों में छुप कर गुनाह करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तो मुलाह़ज़ा फ़रमा ही रहा है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُــوْبُــوْا اِلَــی اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُاللّٰه

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बार बार तौबा करते रहिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब गुनाह सरज़द हो जाए तो इन्सान को चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर ले। अगर बतक़ाज़ाए बशरिय्यत फिर गुनाह कर बैठे तो फिर तौबा कर ले। फिर ख़त़ा हो जाए तो फिर तौबा कर ले। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से हरगिज़ हरगिज़ मायूस न हो। उस की रह़मत बहुत बड़ी है। यक़ीनन गुनाहों को मुआ़फ़ करने में उस की रह़मत का कोई नुक़्स़ान नहीं होता। बस हमें हरदम तौबा व इस्तिग़्फ़ार जारी रखना चाहिये। ह़दीसे़ पाक में इर्शाद होता है,

اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ "या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं ।" (इब्ने माजा शरीफ़, ह़दीस़:4250, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:491, दारुल मा'रेफ़ा, बैरूत) मा'लूम हुवा तौबा से गुनाह मिट जाते हैं । बहर ह़ाल हमे बारगाहे रब्बे जुलजलाल में हर दम झुका रहना चाहिये और उस की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होना चाहिये ।

क्या सिर्फ़ नेक लोग ही जन्नत में जाएंगे ?

रह़मत की बात आई है तो येह अ़र्ज़ करता चलूं कि मुझे बा'ज़ ऐसे नादानों से भी साबिक़ा पड़ा है जो केह रहे थे, "जन्नत में सिर्फ़ नेकियों के ज़रीए़ ही दाख़िला मिलेगा और जो गुनाह करेगा वोह लाज़िमी त़ौर पर जहन्नम में जाएगा, तुम येह जो रह़मत से बख़्शे जाने का केहते हो येह हमारी समझ में नहीं आता ।" यक़ीनन येह शैत़ान के वस्वसे हैं । वरना मैं अपनी त़रफ़ से रब की रह़मत की बात कहां कर रहा हूं, सुनो....! सुनो....! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 24 सूरतुज़्ज़ुमुर आयत 53 में इर्शाद फ़रमाता है:-

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने (ना फ़रमानियों के ज़रीए) अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ना उम्मीद न हो । बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब गुनाह बख़्श देता है बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है ।

(पारह:24 अज़्ज़ुमुर:53)

ह़दीसे़ क़ुदसी है, ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने रह़मत निशान है, سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ علٰی غَضَبِی या'नी मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर सब्क़त रखती है ।

(सह़ीह़ मुस्लिम, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:356, अफ़्ग़ानिस्तान)

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के भाई जान ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान, "ज़ौक़े ना'त" के अन्दर बारगाहे ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करते हैं ।

سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ علٰی غَضَبِی तूने जब से सुना दिया या रब عَزَّوَجَلَّ
आसरा हम गुनाह गारों का और मज़्बूत़ हो गया या रब عَزَّوَجَلَّ

आ़जिज़ बन्दे की ह़िकायत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बहुत बहुत ही बड़ी है । वोह ब ज़ाहिर किसी छोटी सी अदा पर ख़ुश हो जाए तो ऐसा नवाज़ता है कि बन्दा सोच भी नहीं सकता । चुनान्चे "किताबुत्तव्वाबीन" में है, ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़्बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, बनी इस्राईल के दो आदमी मस्जिद की त़रफ़ चले, एक तो मस्जिद में दाख़िल हो गया मगर दूसरे पर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ त़ारी हो गया और वोह बाहर ही खड़ा रह गया और केहने लगा, "मैं गुनहगार इस क़ाबिल कहां जो अपना गन्दा वुजूद ले कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पाक घर में दाख़िल हो सकूं ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उस की येह आ़जिज़ी पसन्द आ गई

और उस का नाम सिद्दीक़ीन में दर्ज फ़रमा दिया।" (किताबुत्तव्वाबीन, स़-फ़हा:83, मक्तबए मू'यद अ़रब शरीफ़) याद रहे! "सिद्दीक़ का द-रजा "वली" और "शहीद" से भी बड़ा होता है।

नादिम बन्दे की हिकायत

इसी त़रह़ की एक हिकायत ***किताबुत्तव्वाबीन*** स़-फ़हा:83 पर लिखी है, एक इस्राईली से गुनाह सरज़द हो गया। वोह बेह़द नादिम हुवा और बे क़रार हो कर इधर से उधर भागने लगा कि किसी त़रह़ उस का गुनाह मुआ़फ़ हो जाए और परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो जाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस की नदामत व बे क़रारी मक़्बूल हुई और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने उस को भी मक़ामे ***सिद्दीक़िय्यत*** से नवाज़ दिया।

शर्मिन्दगी तौबा है

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुशगवार है, اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ या'नी शर्मिन्दगी तौबा है। (अल मुस्तदरक, ह़दीस़:7687, जिल्द:5, स़-फ़हा:326, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या) ह़क़ीक़त येह है कि बा'ज़ अवक़ात गुनाहों पर नदामत वोह काम कर जाती है जो बड़ी से बड़ी इबादत भी नहीं कर सकती, इस का मत़लब हरगिज़ येह भी नहीं कि इबादत न की जाए, येह सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत पर है। कभी नदामत काम कर जाती है तो कभी इबादत चुनान्चे

रोज़ादार डाकू

रौज़ुरियाहीन में है, हजरते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं, मैं एक क़ाफ़िले के हमराह मुल्के शाम जा रहा था, रास्ते में डाकूओं की जमाअ़त ने हमें लूट लिया और सारा मालो अस्बाब अपने सरदार के सामने ढेर कर दिया। सामान में से एक शकर और बादम की थेली निकली। सारे डाकूओं ने निकाल कर खाना शुरूअ़ कर दिया मगर उन के सरदार ने इस में से कुछ न खाया। मैं ने पूछा, सब खा रहे हैं मगर आप क्यूं नहीं खा रहे? उस ने कहा, ***मैं रोज़े से हूं।*** मैं ने हैरत से कहा, तुम लूट मार भी करते हो और रोज़ा भी रखते हो? सरदार बोला, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ के लिये भी तो कोई राह बाक़ी रखनी चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं, कुछ अ़रसे़ के बा'द मैं ने उसी डाकूओं के सरदार को एह़राम की ह़ालत में त़वाफ़े ख़ानए का'बा में मश्ग़ूल देखा। उस के चेहरे पर इबादात का नूर था और मुजाहदात ने उसे कमज़ोर कर दिया था। मैं ने तअ़ज्जुब के साथ पूछा, क्या तुम वोही शख़्स़ नहीं हो? वोह बोला, "जी हां मैं वोही हूं और सुनिये! उसी रोज़े ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ मेरी सुल्ह़ करवा दी है।"

(रौज़ुरिय्याहीन, स़-फ़हा:23, मक्त-बतुल मैमनिय्या, मिस़्र)

हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मा'लूम हुवा कि किसी भी नेकी को छोटी समझ कर तर्क नहीं कर देना चाहिये कि क्या पता वोही छोटी नज़र आने वाली नेकी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल हो जाए। और हमारे दोनों[2] जहां संवर जाएं। इस

हि़कायत से नफ़्ली रोज़े की अहम्मिय्यत भी मा'लूम हुई। अगर्चे हर एक कस़रत के साथ नफ़्ली रोज़े रखने की त़ाक़त नहीं पाता। ताहम कम अज़ कम ***हर पीर शरीफ़ का रोज़ा*** तो रख ही लेना चाहिये कि सुन्नत है। देखिये ना! उस डाकूओं के सरदार को रोज़े ने कहां से कहां पहुंचा दिया! रोज़े की ब-र-कत से उसे हिदायत भी मिली और विलायत भी मिली।

बख़्शिश का बहाना

कीमियाए सआ़दत में ह़ज़रते शैख़ किताानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? फ़रमाने लगे मेरी इबादतें और रियाज़तें मुझे काम न आईं। अलबत्ता रात को उठ कर जो दो[2] रक्अ़त तहज्जुद पढ़ लिया करता था उसी के सबब मग़्फ़िरत हो गई।

(कीमियाए सआ़दत, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:1007, इन्तिशारते गन्जीना, तेहरान)

"रह़मते" ह़क़ "बहा" न मी जूयद
"रह़मते" ह़क़ "बहाना" मी जूयद

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत "बहा" या'नी क़ीमत नहीं मांगती बल्कि उस की रह़मत तो "बहाना" ढूंडती है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! फ़राइज़ की अदाएगी के साथ साथ नवाफ़िल की भी आ़दत डालिये और ख़ुसूस़न तहज्जुद तो हरगिज़ न छोडा करें। क्या मा'लूम तहज्जुद में उठने की मशक़्क़त बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में क़बूलिय्यत पा जाए और हमारी मग़्फ़िरत का बहाना बन जाए।

बा'ज़ मुसल्मान ज़रूर जहन्नम में जाएंगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ख़बरदार! इस रहमत भरे बयान का मत़लब कहीं कोई येह न समझे कि चूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है लिहाज़ा अब नमाज़ें छोड़ दो....र-मज़ान के रोज़े भी मत रखो....T.V. और V.C.R. के रू ब रू बैठो और ख़ूब फ़िल्में डिरामे देखो.... ख़ूब बदनिगाही करो....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है अब मां बाप को सताना शुरूअ़ कर दो.... ख़ूब गालियां बको....कस़रत से झूट बोलो....मुसल्मानों की ख़ूब ***ग़ीबतें*** करो....मुसल्मानों के दिल दुखाओ....बद अख़्लाक़ी के साबिक़ा सारे रीकार्ड तोड़ दो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है। दाढ़ी मुंडवा दो या ख़शख़शी दाढ़ी रखो....चोरी करो....डाका डालो....ज़ुल्मो सितम की आंधियां चला दो....ख़ूब शराब पियो...नशा करो.....जुवा खेलो बल्कि जुवा और मन्शियात का अड्डा ही खोल डालो....जो जो गुनाह अभी तक नहीं कर पाए वोह भी कर डालो क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है। ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!*** इस त़रह़ कहीं शैत़ान कान पकड़ कर आप को अपनी इत़ाअ़त में न लगा दे। जहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रह़ीमो करीम है वहां जब्बारो क़ह्हार भी है, जहां वोह नुक्ता नवाज़ है वहां बे नियाज़ भी है। अगर उस ने किसी छोटे से गुनाह पर गरिफ़्त फ़रमा ली तो कहीं के न रहेंगे। याद रखिये! येह त़य है कि

कुछ न कुछ मुसल्मान अपने गुनाहों के सबब दाख़िले जहन्नम भी होंगे। हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से हर वक़्त लर्ज़ां व तर्सां रहना चाहिये। कि कहीं ऐसा न हो कि इन जहन्नम में जाने वालों की फ़ेहरिस में हमारा नाम भी शामिल हो।

फ़ारूक़े आ'ज़म की म-दनी सोच

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की म-दनी सोच पर क़ुरबान जाइये कि उम्मीद हो तो ऐसी और ख़ौफ़ भी हो तो ऐसा ! चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सिवाए एक के सब को जहन्नम में दाख़िल फ़रमाने वाला हो तो मैं उम्मीद करूंगा कि जहन्नम से महफ़ूज़ रहने वाला वोह एक बन्दा मैं ही हूं और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब बन्दों में से सिर्फ़ एक को दाख़िले जहन्नम फ़रमाने वाला हो तो मैं ख़ौफ़ करूंगा कि कहीं ऐसा न हो कि जहन्नम में दाख़िल होने वाला वोह बन्दा मैं ही हूं। (इत्तिह़ाफ़ुस्सादतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:11, स़-फ़ह़ा:425, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत) बहर ह़ाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस भी नहीं होना चाहिये। और उस के क़हरो ग़ज़ब से बे ख़ौफ़ भी नहीं रहना चाहिये।

बन्दूक़ की एक गोली.....

मैं आप को अपनी बात अ़क़्ली दलील से समझाने की कोशिश करता हूं। म-स़लन इस वक़्त इस इज्तिमाअ़ में दस[10] हज़ार इस्लामी भाई मौजूद हों और कोई दहशत गर्द क़रीबी मकान की छत पर पिस्तोल ले कर खड़ा हो जाए और ए'लान करे मैं सिर्फ़ एक गोली चलाता हूं अगर लगेगी तो सिर्फ़ एक ही को लगेगी बाक़ियों को कुछ नहीं कहूंगा। क्या ख़याल है ? सिर्फ़ एक ही को तो गोली लगनी है ! क्या बक़िय्या नौ हज़ार नौ सौ निन्नान्वे इस्लामी भाई बे ख़ौफ़ हो जाएंगे ? हरगिज़ नहीं हर एक इस ख़ौफ़ से भाग खड़ा होगा कि कहीं वोह किसी एक को लगने वाली गोली मुझे ही न आ लगे। उम्मीद है मेरी बात समझ में आ गई होगी।

आग की जूतियां

याद रखिये ! येह त़य शुदा अम्र है कि कुछ न कुछ मुसल्मान गुनाहों के सबब जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे तो आख़िर हर मुसल्मान इस बात से क्यूं नहीं डरता कि कहीं मुझे भी जहन्नम में न डाल दिया जाए। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बन्दूक की गोली की तकलीफ़ जहन्नम के अ़ज़ाब के सामने कुछ भी नहीं। मुस्लिम शरीफ़ में है, "जहन्नम का सब से हल्का अ़ज़ाब येह है कि मुअ़ज़्ज़ब (या'नी अ़ज़ाब पाने वाले) को आग की जूतियां पहनाई जाएंगी जिस की गरमी और तपश से उस का दिमाग़ पतीली की त़रह़ खौलता होगा। वोह येह समझेगा कि सब से ज़ियादा अ़ज़ाब मुझी पर है।"

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:115, अफ़्ग़ानिस्तान)

बुख़ारी शरीफ़ में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत इस से फ़रमाएगा "सारी दुन्या और इस में जो कुछ मालो दौलत वग़ैरा है वोह सब तेरी मिल्क होता तो क्या तू

अ़ज़ाब से छुटकारा पाने के लिये येह दुन्या और सारा माल फ़िदये में दे देता ?" तो वोह चिल्ला उठेगा, "हां" (सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस:6557, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:261, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत) या'नी सारा मालो अस्बाब दे दूंगा अगर कहीं येह आग की जूतियां मेरे पांव से निकलती हों । बस किसी त़रह़ इस अ़ज़ाब से मुझे छुटकारा मिल जाए ।

क्या सब से हल्का अ़ज़ाब बरदाश्त हो जाएगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सोचो ! बार बार सोचो ! अगर किसी छोटे से गुनाह के सबब येही सब से छोटा और हल्का अ़ज़ाब किसी पर मुसल्लत़ कर दिया गया तो उस का क्या बनेगा ? म-स़लन किसी को गाली दी ह़ालांकि येह कबीरा गुनाह है फिर भी अगर इस जुर्म की पादाश में सब से हल्का अ़ज़ाब ही हो गया तो क्या होगा ? मां बाप को सताने के जुर्म में कि येह भी कबीरा गुनाह है मगर इस जुर्म पर भी अगर सब से हल्का अ़ज़ाब ही हो जाए तो इस की बरदाश्त किस में है ? इसी त़रह़ रोज़मर्रा किये जाने वाले गुनाहों पर ग़ौर करते चले जाइये । झूट बोलने के सबब, किसी की ग़ीबत करने के सबब, **चुग़लख़ोरी** के सबब, ह़राम रोज़ी कमाने के सबब, नशा करने के सबब, फ़िल्में और डिरामे देखने के सबब, गाने बाजे सुनने के सबब । बल्कि T.V. पर सिर्फ़ औ़रत से ख़बरें सुनने के सबब अगर सब से हल्का अ़ज़ाब हो गया तो क्या होगा ? वोह औ़रत भी कितनी बद नसीब है जो चन्द सिक्कों की ख़ातिर T.V. पर आ कर ख़बरें सुनाती है । काश ! उस को येह एह़सास हो जाता कि मेरे ज़रीए़ लाखों मर्द बदनिगाही का गुनाह कर के, अपनी आंखों को ह़राम से पुर कर के अपनी आंखों में जहन्नम की आग भरने का सामान कर रहे हैं । और इस सबब से मैं ख़ुद भी बहुत ज़ियादा गुनहगार हुई जा रही हूं ! बहर ह़ाल जो इस त़रह़ अपने दिल को बहलाता है कि मैं ने तो सिर्फ़ ख़बरों के लिये T.V. रखा है । वोह कान खोल कर सुन ले कि मर्द का अजनबिय्या औ़रत को देखना या औ़रत का अज्नबी मर्द को ब शहवत देखना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है तो अगर T.V. पर सिर्फ़ ख़बरें देखने, सुनने के सबब ही जहन्नम का हल्का अ़ज़ाब मुसल्लत़ कर दिया गया और आग की जूतियां पहना दी गईं तो क्या बनेगा ?

अ़ज़ाब की झल्कियां पढ़ना चाहें तो.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने आप को कम अज़ कम छोटे और हल्के अजाब से ही डरा दो ह़ालांकि जहन्नम में एक से एक ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब हैं अगर इन अ़ज़ाबों की मुख़्तस़र सी झलक मा'लूम करना चाहें तो मेरा तह़रीरी बयान "**पुर अस्रार ख़ज़ाना**" पढ़ लीजिये या इस का केसेट सुन लीजिये शायद ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से आप के रूंगटे खड़े हो जाएं । येही ज़ेहन बना लीजिये कि अगर बिग़ैर शर-ई उ़ज़्र के मैं ने नमाज़ की जमाअ़त तर्क कर दी । और सब से हल्का अ़ज़ाब दे दिया गया तो मेरा क्या होगा ! अगर बे पर्दगी कर ली, अपनी भाभी से बे तकल्लुफ़ी की या उस को

क़्दन देखा, इसी त़रह़ चची, ताई मुमानी, साली, ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफी ज़ाद, चचाज़ाद या ताया ज़ाद, से पर्दा न किया उन के सामने बिला तकल्लुफ़ आते जाते रहे, इन को देखते रहे, इन से हंस हंस कर बातें करते रहे और इन जराइम में से किसी एक जुर्म की पादाश में अगर पांव में आग की जूतियां डाल दी गईं तो क्या बनेगा ? जी हां ! भाभी, चची, ताई, मुमानी, वग़ैरा वग़ैरा जिन का तज़्किरा हुवा येह सब अज्नबिय्या और ग़ैर मह़रमा औ़रतें हैं इन से और हर उस औ़रत से शरीअ़त ने पर्दे का हुक्म दिया है जिन से शादी हो सकती है। इसी त़रह़ औ़रत भी तमाम ग़ैर महारिम रिश्तेदारों से पर्दा करे।

तबाही की सूरतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस भी नहीं रहना चाहिये और उस के क़हरो ग़ज़ब से बे ख़ौफ़ भी नहीं होना चाहिये। दोनों[2] ही सूरतों में तबाही है। अगर कोई रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो गया वोह भी हलाक हुवा और जो गुनाहों पर दिलीर हो गया और पकड़ में आ गया तो वोह भी बरबाद हुवा। बहर ह़ाल ग़ैरत व मुरुव्वत का तक़ाज़ा भी येही है कि जिस परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से हमें बे शुमार ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं उस की इत़ाअ़त की जाए और उस के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम से हर दम वाबस्ता रहते हुए उन की सुन्नतों को अपनाया जाए। इसी में हमारे लिये दुन्या व आख़िरत की भलाई है।

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब ! عَزَّوَجَلَّ
नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ बनूंगा या रब !
कब गुनाहों के म-रज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा !
कब मैं बीमार मदीने का बनूंगा या रब ! عَزَّوَجَلَّ
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब ! عَزَّوَجَلَّ

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم